ISSN : 2393-8358

UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR)
Impact Factor : 2.314

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 5, No. 18 Peer Reviewed Journal November, 2018

Scanned by CamScanner

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research
(An International Peer Reviewed Refereed Research Journal)

Head Office :
S.K.C. School of English and Foreign Languages
Assam, India
E-mail : ijcrjournal971@gmail.com
Website : ijcrjournal.com

Branch Office :
H.No. 498, Kakarmatta (South), P.O.-D.L.W., Distt.-Varanasi-221004 (U.P.)
Mob. 9415388337

ISSN 2393-8358

Scanned by CamScanner

Impact Factor : 2.314
ISSN : 2393-8358

विषयानुक्रमणिका

→	तत्वमीमांसा विरोधी युक्तियों की समीक्षा **डॉ0 रजनीश कुमार पाण्डेय**	1-2
→	स्याम सुरभि पय विसद अति की व्यावहारिक व्याख्या **डॉ० मिथिलेश कुमार त्रिपाठी**	3-4
→	शिल्प कला में बुनकर कला का विकास (छठीं शती ई०पू० से लेकर तीसरी सती ई० तक) **डॉ0 सन्तोष कुमार सिंह**	5-10
→	शाङ्खायनप्रकृतिकपौर्णमासहौत्रम् **डॉ0 ज्ञानेन्द्र सापकोटा**	11-18
→	भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में गाँधी जी का उदय **डॉ0 रवीन्द्र कुमार द्विवेदी**	19-22
→	भारतीय महिला श्रमिक : दशा एवं दिशा (वाराणसी शहर की महिला श्रमिकों पर आधारित : एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन) **प्रो0 रीता सिंह**	23-26
→	ग्रामीण शिक्षा व्यवस्था एवं ग्राम पंचायतें **डॉ0 पंकज कुमार प्रेम**	27-28
→	'सूरज का सातवां घोड़ा' : भावुक प्रेम का यथार्थवादी आख्यान **डॉ0 जयसिंह मीणा**	29-30
→	डॉ0 रामबिलास शर्मा की आलोचना जमीन..... **धर्मवीर यादव**	31-33
→	सरयूपार क्षेत्र की भौगोलिक अवयव की ऐतिहासिक अध्ययन **विनोद कुमार जायसवाल**	34-36
→	कौटलीय अर्थशास्त्र में त्रिवर्ग : एक विश्लेषण **डॉ0 विजय कुमार मिश्र**	37-40
→	Corruption in Governance and Human Rights **Ramesh Chandra**	41-46
→	1857 के संग्राम में जनपद आजमगढ़ में कुंवर सिंह का योगदान **आमोद कुमार सैनी**	47-48
→	अनर्घराघव एवं प्रसन्नराघव का समीक्षात्मक अध्ययन **मनोज कुमार यादव**	49-50
→	भोजपुरी लोकगीतों में मानव धर्म **डॉ0 सत्यवान**	51-56
→	कुजदोषविचारः **डॉ0 अमर कुमार**	57-60

Scanned by CamScanner

→	Customer Loyalty with Reference to Maruti Suzuki: A Case Study of Gaya City, Bihar **Iftekhar Anwar**	*61-67*
→	Shashi Deshpande as a Novelist **Dr. Ramsurat**	*68-70*
→	भारतीय जनजातीय आन्दोलन में बिरसा मुंडा का योगदान **डॉ0 सच्चिदानन्द चौबे**	*71*
→	भारतीय अस्मिता और कार्यालयी हिन्दी **डॉ0 रवि प्रकाश मिश्र**	*72-74*
→	असंगठित क्षेत्र में कार्यशील वरिष्ठ नागरिकों की सामाजिक सुरक्षा : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषणात्मक अध्ययन **श्रीमती कुसुम एवं डॉ0 उमेश कुमार दीक्षित**	*75-78*
→	Astronomical Year **Dr. Sachin Kumar**	*79-82*
→	भारतीय ग्रामीण सामाजिक संरचना में जाति–प्रथा **प्रो. (डॉ.) अमर ज्योति सिंह, प्रो. (डॉ.) अमर बहादुर सिंह एवं डॉ. अमरनाथ सिंह**	*83-84*
→	भदोही जिले के कालीन उद्योग में लगे बाल श्रमिकों की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का विश्लेषण **बनमाली यादव एवं डॉ. क़मर इज़हार**	*85-92*
→	प्रारंभिक बौद्ध भिक्षुणी संघ की प्रमुख भिक्षुणियाँ **विश्व दत्त**	*93-96*
→	उषा प्रियंवदा : प्रेम, स्वतंत्रता और परिवार के बीच फंसी स्त्री की दास्तान **डॉ0 अंजू लता**	*97-101*
→	भूमि अधिग्रहण कानून : कुछ जरूरी सवाल **विभा अय्यर**	*102-104*
→	हिन्दी साहित्य और पुनरुत्थानवाद **मनीष तोमर**	*105-110*
→	मिथकों में स्त्री अस्मिता और भीष्म साहनी **सुप्रिया पाठक**	*111-114*
→	ধর্মীয় সন্ত্রাসের আলোকেরবীন্দ্রনাথের 'বিসর্জন' **ধ্রুপদ চৌধুরী**	*115-118*
→	Trends of Values in the Education : A Discourse (With Special Reference to Indian Society) **Dr. Sandhya Pandey**	*119-122*
→	Microfinance in India **Dr. Pratima Jaiswal**	*123-130*
→	मीरा के काव्य में स्त्री चेतना का स्वर **अरुण कुमार**	*131-133*

Scanned by CamScanner

UGC Approved Journal No. 48416
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 5, No. 18, November, 2018
Impact Factor : 2.314
ISSN : 2393-8358

उषा प्रियंवदा : प्रेम, स्वतंत्रता और परिवार के बीच फंसी स्त्री की दास्तान

डॉ. अंजू लता
सहायक प्राध्यापक, तेजपुर विश्विद्यालय

आजादी के बाद हिंदी कथा साहित्य की दिशा और दशा लगातार बदलती दिखाई देती है। इस दौर में कहानी और उपन्यास के मूलभूत ढांचे में परिवर्तन दिखाई देता है। स्त्री लेखन की दृष्टि से यह युग अत्यधिक महत्वपूर्ण युग है। कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी तथा उषा प्रियंवदा इस युग में स्त्री लेखक की प्रणेताओं के रूप में जानी जाती हैं। बदलते सामाजिक परिदृश्य के बीच इनका साहित्यिक लेखन स्त्रियों की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति की आधार भूमि तैयार करती हैं। पढ़ी-लिखी तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर स्त्री समाज तथा परिवार की सामंती संरचना के बीच अपनी पहचान बनाने की जद्दोजहद करती दिखाई देती है। इस संघर्ष में उनके सामने समाज के दोहरे प्रहार का शिकार होना पड़ता है। इस संघर्ष में उनके सामने विघटित होते सामाजिक तथा पारिवारिक मूल्यों से भी जूझना पड़ा। जिसकी अभिव्यक्ति उस समय के महिला रचनाकारों में दिखाई देती है। इस दौर की स्त्री लेखिकाएं एक तरफ तो अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ती दिखाई देती हैं तथा दूसरी तरफ अपनी अस्मिता से बाहर निकलने का प्रयास भी जिसके कारण इस समय का साहित्य सशक्त रूप से स्त्री प्रश्नों को उभारता दिखाई देता है। स्त्री साहित्य अपने नये- नये प्रयोगों के लिए जाना जाता है। जिसके अंतर्गत अपनी पहचान की लड़ाई लडने वाली अस्मिताएं उभरकर सामने आती हैं। परिवर्तन की तेज रफ्तार के बीच परिवार और व्यक्ति के विचार लगातार बदलते जाती है। शिक्षा का प्रचार प्रसार परिवार के बाहर भी स्त्रियों के लिए स्थान निर्मित करती दिखाई देती हैं। एकतरफ परिवार की सामंती संरचना तथा दूसरे तरफ बाहर के समाज की स्वतंत्रता के बीच फंसी स्त्री के जीवन की विड़बना इस दौर के कथा साहित्य में दिखाई देती है।

हिंदी कथा साहित्य में उषा प्रियंवदा की पहचान वापसी कहानी से मानी जाती है। इस कहानी को नई कहानी आंदोलन की पहली कहानी के रूप में जाना जाता है। अपनी कलात्मक संवेदना में यह कहानी एकदम अलग ढंग के संसार को रचती दिखाई देती है। उषा प्रियंवदा जी की अधिकांश कहानियाँ स्त्री जीवन को केंद्र में रखकर लिखी गयी हैं। खासतौर से पढ़ी – लिखी स्त्री तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर औरत इनकी कहानियों के केंद्र में है। प्रमुख रूप से इनके तीन कहानी संग्रह हैं। जिंदगी और गुलाब के फूल, कितना बड़ा झूठ, और एक कोई दूसरा कहानी संग्रह की अधिकांश कहानियाँ आधुनिक स्त्री जीवन की त्रासदी तथा विसंगतियों को विस्तार से व्याख्यायित करती हैं। इन कहानियों में मूल रूप से भारतीय परंपराओं, रूढ़ियों तथा संस्कारों आदि की आलोचना दिखाई देती है। इस दौर की प्रमुख स्त्री लेखिकाओं खासतौर से मन्नू भंडारी और कृष्णा सोबती के समकालीन उषा प्रियंवदा अपनी अलग पहचान बनाती दिखाई देती हैं। यदि देखा जाए तो इन तीनों लेखिकाओं को हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के प्रवर्तक के रूप में देखा जा सकता है। जाहिर हैं इनकी कहानियाँ पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री के निर्धारित स्थान को रेखांकित करती हैं। उस तंत्र की आलोचना करती हैं जिसमें औरत को दोयम दर्जे का स्थान प्राप्त है। इसलिए इनकी कहानियों में विषय – वस्तु के रूप में स्त्रियों की केंद्रीय भूमिका निर्धारित की गयी है। उनके ईर्द- गिर्द किस तरह सामंती परिवेश एक तरह के जाल को बुन रहा है जिसके बीच फंसकर वह अपनी जीवन की प्राथिमकताएं छोड़कर परिवार और जिम्मेदारियों के बीच फंसी रह जाती हैं।जिस दौर में उषा प्रियंवदा साहित्य में आती हैं वह स्त्री विमर्श के आरंभ का दौर है। इस युग में इनके साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जिसका विशलेषण इनकी कहानियों के माध्यम से किया जा सकता है। लगातार व्यक्ति और परिवार के विघटित संबंधों के बीच औरत की बदलती पहचान की व्याख्या करने वाली अनेक कहानियाँ इन्होंने लिखी। खासतौर से इन बदलते पारिवारिक मूल्यों ने स्त्री की मूलभूत पहचान को बदलने का कार्य किया।

पुरातन पंथी मूल्यों का टूटना तथा नये जीवन मूल्यों के बीच परिवार की बदलती संरचना को वापसी, कच्चे धागे, दृष्टि दोष , कंटीली छांह तथा झूठा दर्पण आदि कहानियों में देखा जा सकता है। खासतौर से वापसी कहानी का उल्लेख करना आवश्यक हैं जहाँ गजाधरबाबू जैसे निरीह वृद्ध का चित्रण किया गया है। उनके भीतर की निरिहता उस बदलती सामाजिक प्रक्रिया की परिणति है जिसको निर्मित करने वाले वह स्वयं ही है। अपने स्वयं के परिवार के लिए समय ना निकाल पाने के कारण वह केवल धनोपार्जन का साधन मात्र बनकर रह गये हैं। परिवार के किसी भी सदस्य के मन में उनके लिए ना तो प्रेम का भाव है और ना ही किसी प्रकार का सम्मान । यहाँ तक की उनकी पत्नी के मन में भी उनके प्रति किसी प्रकार की जिम्मेदारी का भाव नहीं है । बदलते पारिवारिक मूल्यों की बीच फंसे गजाधर बाबू दया के पात्र बन जाते हैं। अपने तिरस्कार को सहन नहीं करने के कारण वह वापस नौकरी पर जाने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

Scanned by CamScanner